# उत्तर भारतीय लोक संगीत में अवनद्य वाद्यों का विवेचन

**नीतू कुमारी**

लोक संगीत ताल वाद्यों का प्रयोग सर्वोपरि होता है तथा विस्तार क्षेत्र भी अधिक है। सामान्यतः लोक संगीत में वाद्यों की समस्त सामग्री प्रकृति जन्य है लोक संगीत में वाद्यों का महत्व शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा अधिक होता है। विशेष रूप से ताल वाद्य का जिसके अन्तर्गत अवनद्य वाद्य आते हैं। लोक संगीत आज भी प्रकृति एवं स्वछन्द वातावरण में पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है। वह आज भी कृत्रितमा से दूर है इसलिए उसमें हमें ताल वाद्यों का राज्य दिखाई देता है। सृष्टि में यह ताल के प्रति मानव की विशेष रूचि है तथा इसमें लय, ताल, समय अथवा मात्रा प्रधान होती है प्रत्येक लयकारी और ताल का सौन्दर्य एक दूसरी ताल के सौन्दर्य से भिन्न होता है। द्रुत ताल की चंचलता, मध्य ताल का प्रवाहत्मकता, सुन्दरता तथा विलम्बित ताल की गम्भीरता अलग–अलग सौन्दर्याद्रेक है इसी विभिन्न्ता से संगीत की सूझबूझ की तथा उसकी योग्यता का पता चलता है स्वर, ताल, लय युक्त राग का चरमोत्कर्ष 'सम' पर आकर मानो सौन्दर्य का आकार स्वकल्पित होता है। इस प्रकार भारतीय संगीत इस सिद्धान्त की अवधारणाओं को समाहित किये हुये रहता है और वही उसका सौन्दर्य शास्त्रीय आधार है।